सखि री मीरा

काव्य संग्रह

अनुराग दीक्षित

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

सखी री मोरी

काव्य संग्रह

अनुराग दीक्षित

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-069-8"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं मिडिया प्रभारी - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **अनुराग दीक्षित**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

SAKHI RE MORI BY ANURAG DIXIT

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

प्राक्थ्थन

किसी भी रचनाकार के लिए उसकी रचनाओं का प्रकाशित होना उसके लिए गौरवमय क्षण होता है, आज के इस इंटरनेट युग में भी पुस्तकों का अपना महत्वपूर्ण स्थान है पाठकों के लिए पुस्तक एक सहज पठनीय सामग्री है ! इस रचना संग्रह की कवितायें किसी भी पाठक को एक धनात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण करने में सक्षम हैं साथ साथ हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की झलक भी इनमें परिलक्षित होती है, यथा मेहँदी एक सुहाग की प्रतीक पे लिखी रचना सखी री मोरी मेहँदी है रंग लायी कुछ रचनाएँ दो सखियों के बीच का सम्बाद प्रतीत होती हैं !

इसके अतिरिक्ति पाठक को सहज ही सुखानुभूति कराने वाली रचनाएँ, यहाँ मेरा ऐसा प्रयास है की मेरी रचनाएँ भागमभाग जीवनचर्या के समय में राहत व सुकून दें साथ साथ पाठक वर्ग को भी नयी ऊर्जा से भर दें इस प्रयास में मैं कहाँ तक सफल हो पाया हूँ इसका आंकलन हमारे सुधी पाठक वर्ग को करना है!

मेरे इस प्रयास में अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन की महत्वपूर्ण भूमिका है जिसके माध्यम से मेरी रचनाएँ आप सब को उपलब्ध हो सकी इसके लिए मैं उन्हें बहुत बहुत धन्यवाद देता हूँ !

शुभकामनाओं सहित
अनुराग दीक्षित
शिवनगर, फर्रुखाबाद

अनुक्रमणिका

1.	सखी री मोरी	5
2.	पिया बिन	6
3.	सखी री प्रीत की रीत पुरानी	7
4.	मुझे ऐसे निहारो न मोरे पिया	8
5.	तेरी याद मुझको सताती बहुत है	9
6.	मेरे हमदम साथ निभाना	10
7.	पिया कब तक निहारूं	11
8.	झूला पड़ गयो	12
9.	सुन्दर पावन धरा भारती	13
10.	कर लो मुझे स्वीकार	14
11.	हुआ तन्हा सफर मुश्किल	15-16
12.	दिल जो टूटा	17
13.	तेरी चाहत लिए गुनगुनाता रहा	18
14.	भाव एक गीत है	19-20
15.	आह मन की व्यथा	21
16.	साथी गर तू साथ निभाए	22
17.	मुस्कान	23
18.	तुमको कोई गीत गाना चाहिए	24
19.	साथी साथ सुहाना तेरा	25
20.	मेरे जज्वात	26
21.	तुम जो फूलों सी	27
22.	बस तुम्हारे लिए	28
23.	तेरी एक नजर	29
24.	बहुत ही तुम तो हो नादां	30 - 31

सखी री मोरी

सखी री मोरी मेहंदी है रंग लायी
लाल लाल रंग रंगी हथेली प्रीतम के मनभायी।
सुबह पहर से बैठ अंगनवा
रुचि रुचि खूब लगाई
प्रीत रंग मैं रंगी निगोड़ी
सुधि बुधि सब बिसराई
सखी री मोरी मेहंदी है रंग लायी
लाल लाल रंग रंगी हथेली प्रीतम के मनभायी।
छुपा छुपा सा नाम लिख दिया
पियकी मति भरमाई
जितनी गहरी चाहत उनकी
उतनी चटख सुहाई
सखी री मोरी मेहंदी है रंग लायी
लाल लाल रंग रंगी हथेली प्रीतम के मनभायी।
भीनी भीनी खुशबू आई
बहका मनवा जाई
लाल रंग के जादू से
मोरा बलम उबर ना पाई
सखी री मोरी मेहंदी है रंग लायी
लाल लाल रंग रंगी हथेली प्रीतम के मनभायी।

पिया बिन

सखी री मोहे घर आंगन न सुहावे
पिया बिन सूना री सावन लागे।

फूल खिले मुरझाए पिया नहिं आए,
पपिहा पिहु पिहु कूक मचाए जिया अकुलाये
पुरवा अगन लगाए हिया झुलसाये,
रतिया बैरन निदिया न आवे
सखी री मोहे घर आंगन न सुहावे
पिया बिन सूना री सावन लागे।
छम छम पायलिया पुकारे कंगना झनकारे
बदरवा घिर आये कारे कारे
नयनवा बरसत सांझ सकारे
कछु नहिंसूझे कछु नहिं भावे
सखी री मोहे घर आंगन न सुहावे,
पिया बिन सूना री सावन लागे
बरखा अगन लगाए सजा नहिंजाए,
सखी री मोरी दरपन मनहिं डराये
काहे मोरे सजनवा न आये
कब वा विरियां आवे
सजनवामोहे कंठलगावे
सखी री मोहे घर आंगन न सुहावे
पिया बिन सूना री सावन लागे।

सखी री प्रीत की रीत पुरानी

सखी री प्रीत की रीत पुरानी
मीरा तप के प्रेम अगन में,
जोगन बनीं दिवानी
कान्हा की वंशी की धुन पर
राधा सुध विसरानी
सखी री प्रीत की रीत पुरानी ।

गोपिन प्रीत करी मोहन से,
पाती सुन पगलानी
प्रीत करी मीनन ने जल से
दूर होत अकुलानी
सखी री प्रीत की रीत पुरानी ।

कह गये लोग सयाने सांची
डगर नहीं ये सुहानी
प्रीत में चैन मिले नहिं पल भर
ना करियो नादानी
सखी री प्रीत की रीत पुरानी ।

मुझे ऐसे निहारो न मोरे पिया

मुझे ऐसे निहारो न मोरे पिया,
उठ रही है कसक बावरा सा जिया
ले चलो तुम मुझे प्रीत के लोक में
मेरे मनमीत जीवन समर्पित किया
छोड़ देना न तुम मुझको मझधार में
मांगती हूँ वचन आज तुमसे पिया
मुझे ऐसे निहारो न मोरे पिया
उठ रही है कसक बावरा सा जिया
ना रहें फासले ना रहें दूरियां,
जन्म जन्मों को अपना मिलन है पिया
मेरा सौभाग्य तुमसे ही मेरे सजन,
मेरी मेंहदी महावर तुम्हीं से पिया
मुझे ऐसे निहारो न मोरे पिया
उठ रही है कसक बावरा सा जिया
मैंने माना हूँ तुम बिन अधूरी सजन
तुम हो दीपक तो मैं तुम्हरी बाती पिया
मैं सुहागन रहूँ जन्म जन्मों तलक
मातु गौरा से मैंने ये वर है लिया
मुझे ऐसे निहारो न मोरे पिया
उठ रही है कसक बावरा सा जिया

तेरी याद

तेरी याद मुझको सताती बहुत है
जलाती है पल पल विरह की अगन में
जियूं कैसे तुम विन अकेले मगन मैं
छोड़ दूँ क्यों न सब कुछ तुम्हारी लगन में
मेरी मुश्किलों को बढाती बहुत है
तेरी याद मुझको सताती बहुत है।
तुम्हीं जब नहीं साथ मेरे रहोगे
न दिल की सुनोगे न दिल की कहोगे
ये जज़्बात अपने छुपाते फिरोगे
घनीभूत पीड़ा जगाती बहुत है
तेरी याद मुझको सताती बहुत है ।
आ भी जाओ कि सावन की सोंधी झड़ी है
पास बैठो कहां की तुम्हें अब पड़ी है
मिली उम्र बस ये घड़ी दो घड़ी है
जिन्दगी सबको ये आजमाती बहुत है
तेरी याद मुझको सताती बहुत है ।

मेरे हमदम साथ निभाना

मेरे हमदम साथ निभाना
मेरे प्रियतम हमराही बन,
साथ हमारे चलते जाना
मेरे हमदम साथ निभाना ।।
तुम से ही सब सुख दुःख मेरा
तुम से ही खुशियों का डेरा
थाम के जीवन डोर हमारी
गीत खुशी के गाते जाना
मेरे हमदम साथ निभाना ।
साथ साथ मैं चलूँ तुम्हारे
दूर करूं पथ कंटक सारे
निष्ठुर बन छुप छुप कर मुझको
झूठ मूठ भी नहीं सताना
मेरे हमदम साथ निभाना ।
खिली खिली सी तुम संग प्रियतम
तुम बिन मैं ज्योंमीन नीरसम
मुरझाऊंगी खिल न सकूँगी
ना मुझको भरमाना
मेरे हमदम साथ निभाना !

पिया कब तक निहारूं

पिया कब तक निहारूं मैं अब द्वार पे
डाल दो एक नजर मेरे श्रृंगार पे ।
चैन चूड़ी चुराती रही रात दिन,
मैंने काटे विरह के सभी पल हैं गिन
चौंक उठती हूँ पायल की झंकार पे
ध्यान दो कुछ मेरी आज मनुहार पे
पिया कब तकनिहारूं मैं अब द्वार पे ।
डाल दो एक नजर मेरे श्रृंगार पे ।
राह तकती तुम्हारी मैं दिल थाम के
सिर्फ वादे तुम्हारे सुबह शाम के,
धडकनें बढ़ रहीं रात श्रृंगार की
आ भी जाओ कि ऋतु आ गई प्यार की
मुझको पूरा यकीं है मेरे प्यार पे,
पिया कब तक निहारू मैं अब द्वार पे
डाल दो एक नजर मेरे श्रृंगार पे ।

झूला पड़ गयो

झूला पड़ गयो अमवाके डार जी
संइया बिन मनवा संइया बिन मनवा
संइया बिन मनवा न लागे हमार जी
ए जी कोई ला दे बाकूं
अम्बे कोई बुला दे बाकूं
कह के गयो है मोसूं चार दिन कूं
रिमझिम रिमझिम बदरा बरसे
नयन बावरे जियरा तरसे
हिया में जैसे लगे है कटार जी
झूला पड़ गयो अमवा के डार जी।
राह मै ताकूं पलकें बिछाऊं
कासे कहूं री काकूं समझाऊँ
कैसे सजनवा को पास बुलाऊं
मोपे ना होवै अब श्रंगार जी ।
झूला पड़ गयो अमवा के डार जी।
संइया बिन मनवा न लागे हमार जी

सुन्दर पावन धरा भारती

कल कल करती गाती गंगा जय जय गान उचारती
सुन्दर पावन धरा भारती देवभूमि जग तारती ।
वीर प्रसविनी पुण्य भूमि तू
जन गण भाग्य संवारती
सवा अरव पुत्रों की जननी
महामातु माँ भारती ।
कल कल करतीं गाती गंगा जय जय गान उचारती
सुन्दर पावन धरा भारती देवभूमि जग तारती ।
ऋतुएँ अदल-बदल कर खुद से
आँगन तेरा बोहारतीं
प्रहरी वन सागरमाथा की,
चोटी तुम्हें निहारती ।
कल कल करतीं गाती गंगा जय जय गान उचारती
सुन्दर पावन धरा भारती देवभूमि जग तारती ।
प्रकृति स्वयं आ बसे जहां पर
माँ का रूप संवारती,
सागर धोता चरण तुम्हारे
हिमगिरि गाता आरती ।
कल कल करतीं गाती गंगाजय जय गान उचारती
सुन्दर पावन धरा भारती देवभूमि जग तारती ।

कर लो मुझे स्वीकार

कर लो मुझे स्वीकार अब तुम भी प्रिये
धन धान्य जीवन धन निछावर,
कर रहा हूँ मैं प्रिये,
प्रेम-पथ की सहचरी बन रूपसी,
कर लो मुझे स्वीकार,
अब तुम भी प्रिये ।
हाथ अपना आज दे दो हाथ में
सौभाग्य से हम तुम मिले हैं साथ में ,
आशीष हमको दे रहे धरती गगन
और फिर साक्षी बनी पावन अगन
दे दिये मैंने तुम्हें सातों बचन
बांधता अब प्रीत बन्धन में प्रिये
कर लो मुझे स्वीकार अब तुम भी प्रिये ।
पूर्व में थीं स्वप्न में तुम दूर सी
चांद के विखरे हुए कुछ नूर सी
बन के मेरी संगिनी सहधर्मिणी
आज फिर सौभाग्य से तुम मिल गईं,
व्यग्र उर में प्रीत की सतरंग कलियाँ खिल गईं
साथ हम मिल कर रहेंगे अब प्रिये
कर लो मुझे स्वीकार अब तुम भी प्रिये ।

हुआ तन्हा सफर मुश्किल

हुआ तन्हा सफर मुश्किल
चलो फिर से मिलाएं दिल।
समय ने जख़्म दे फाड़ी है,
अपनी प्रीत की चादर
चलो फिर जोड़ देते हैं
इसे हम प्रेम से सिल सिल
हुआ तन्हा सफर मुश्किल
चलो फिर से मिलाएं दिल।
उन्हें हम मिल के दें खुशियाँ
जो गुरबत में मरें तिल तिल
किसी की आँख का पानी
धवल मोती बनाएं मिल
हुआ तन्हा सफर मुश्किल
चलो फिर से मिलाएं दिल।
किसी मरुभूमि पर जाकर,
विहंस हम फिर खिलाएं गुल
व्यथित भटके मुसाफिर को

मिले उसकी नई मंजिल

हुआ तन्हा सफर मुश्किल

चलो फिर से मिलाएं दिल।

चलो लेकर शपथ हम सब

बनाएं एक बेहतर कल

ये छोड़ो बैर का नाता

रहें हम लोग सब हिल मिल

हुआ तन्हा सफर मुश्किल

चलो फिर से मिलाएं दिल।

दिल जो टूटा

दिल जो टूटा कभी भी कलमकार का
ये कलम शब्द के पार फिर जाएगी।
वेदना की घनीभूत पीड़ा निकल,
तीर सी चीर कागज का उर जाएगी।
चार दिन चांदनी ही मिले चाँद को,
रात घनघोर मावस की फिर आएगी।
स्वप्न सजते समय के बियावान में,
टूटने से कहानी ठहर जाएगी।
अश्रु की बूंद गिरस्वांति सीपी सरिस,
भाव के मोतियों सी बिखर जाएगी।

तेरी चाहत लिए

तेरी चाहत लिए गुनगुनाता रहा
कितने रंगीन सपने सजाता रहा।
मन में उठती उमंगों का इक जोश था,
तब कहाँ वक्त का कुछ हमें होश था
दिन-व-दिन देखने को तरसती नजर,
तुझको पाने को रव को मनाता रहा
तेरी चाहत लिए गुनगुनाता रहा
कितने रंगीन सपने सजाता रहा।
रोज का ये अहम एक था सिलसिला,
आज ना कोई शिकवा नहीं है गिला,
चाहने से कहीं कोई कब है मिला
वो ही मिलता जिसे रव मिलाता रहा,
तेरी चाहत लिए गुनगुनाता रहा
कितने रंगीन सपने सजाता रहा

भाव एक गीत है

भाव एक गीत है, मन का संगीत है
भावना की सघन एक अनुभूति है।
भाव से कामना भाव से साधना,
भाव से है सकल देव आराधना
भाव है वेदना, भाव है चेतना
भाव से ही बनी ये सभी नीति है।
भाव एक गीत है, मन का संगीत है
भावना की सघन एक अनुभूति है।
भाव वंशी मधुर श्याम की तान है,
भाव विरहा व्यथित गोपिका गान है
भाव से मान है भाव सम्मान है
भाव से ही रचित हार औ जीत है।
भाव एक गीत है मन का संगीत है,
भावना की सघन एक अनुभूति है।
भाव सेचाह है भाव से आह है,
भाव से ही सरलतम कठिन राह है
भाव से त्याग है भाव से वासना

भाव से ही रचित प्रेम और प्रीत है
भाव एक गीत है मन का संगीत है
भावना की सघन एक अनुभूति है।
भाव से भेद है भाव से खेद है,
भाव गीता रचित भाव से वेद है
भाव से ग्रीष्म है भाव से शीत है
भाव से शत्रुता भाव से मीत है
भाव एक गीत है मन का संगीत है
भावना की सघन एक अनुभूति है।

आह मन की व्यथा

आह मन की व्यथा, एक सघन पीर है,
दर्द का व्याकरण नैन का नीर है।
वेदना व्यक्त होती सतत् आह में
पाँव कंटक चुभे ज्यों कहीं राह में
आह दुःसह नियति का चला तीर है
आह पीड़ित व्यथित द्रोपदी चीर है
आह मन की व्यथा एक सघन पीर है
दर्द का व्याकरण नैन का नीर है।
वाह चहका हुआ सा चकित चाव है,
एक लहर सा खुशी का मृदुल भाव है
वाह जादू जगाता जगत राग है
वाह बहका हुआ सा मगन फाग है
आह और वाह दोनों जरूरी यहाँ,
गर बदलनी यहाँ अपनी तकदीर है।
आह मन की व्यथा एक सघन पीर है,
दर्द का व्याकरण नैन का नीर है।

साथी गर तू साथ निभाए

साथी गर तू साथ निभाए
नामुमकिन मुमकिन हो जाये !"
माना है दो पगकी दूरी,
पग भर में ही कर लें पूरी
तेरा मेरा व्यर्थ सभी है
हम हो हम हरषायें
साथी गर तू साथ निभाए
नामुमकिन मुमकिन हो जाये !"
मिलन पूर्ण किस्मत का लेखा,
कौन घड़ी कब किसने देखा
कभी मिलन तो कभी जुदाई
आ हम हाथ बढ़ायें
साथी गर तू साथ निभाए
नामुमकिन मुमकिन हो जाये !"
कौन रखे कल की अभिलाषा
जीवन है अतृप्त पिपासा,
यौवन घट अमृत जल भर दे,
प्यास तृप्त हो जाये
साथी गर तू साथ निभाए
नामुमकिन मुमकिन हो जाये !

मुस्कान

तुम्हारी ये मोहक मुस्कान,
विकल कर जाती जीवन प्रान ! ’’’
अरे मृदु मधुर तुम्हारे वैन
दिखें चंचलतम दोनों नैन
किये नित व्यथित हमें दिन रैन
भंवें तेरी ज्यों काम कमान
तुम्हारी ये मोहक मुस्कान,
विकल कर जाती जीवन प्रान !’’’’’
ठगी सी रहे प्रीत मनुहार
ठिठक जाता मन बारम्बार
तुम्हारे सुरभित सज्जित केश
नहीं रह जाता ज्यों कुछ शेष
और उस पर यौवन की शान
तुम्हारी ये मोहक मुस्कान,
विकल कर जाती जीवन प्रान ! ’’’

तुमको कोई गीत गाना चाहिए,

तुमको कोई गीत गाना चाहिए,

राग दिल का गुनगुनाना चाहिए।

नासमझ नादान नाजुक,

इस हृदय की प्रीत है,

गीत का हर शब्द तेरा,

तुझपे मेरी जीत है,

जीत का त्यौहार आना चाहिए

तुमको कोई गीत गाना चाहिए,

राग दिल का गुनगुनाना चाहिए,।

चार पल पहलू में तेरे जी लिए,

हमने तेरी प्रीत प्याले पी लिए

अब तो बस सुरूर छानाचाहिए

तुमको कोई गीत गाना चाहिए,

राग दिल का गुनगुनाना चाहिए

साथी साथ सुहाना तेरा

साथी साथ सुहाना तेरा
जीवन बगिया महकाए ।
हर मुश्किल आसान बने
निज मार्ग सुगम होता जाए,
रीति अनोखी इस जीवन की,
धूप छाँव आए जाए,
साथी साथ सुहाना तेरा
जीवन बगिया महकाए।
प्रीत तुम्हारी सम्बल मेरा
शक्ति अनोखी भर जाए,
पुष्पित हों तरु पादप पल्लव
सुरभित मन्द पवन आए,
साथी साथ सुहाना तेरा
जीवन बगिया महकाए ।
साथ न छूटे साथी तेरा
ईश्वर से वर मिल जाए
विपुल रहे फुलवारी सारी
हर्षित मन नित मुस्काए
साथी साथ सुहाना तेरा
जीवन बगिया महकाए ।

मेरे जज्बात

रात भर सौ सवालों मे उलझा रहा,
मेरे जज्वात दिल में मचलते रहे।
प्रीत के बोल मुख से न निकले कभी,
हमकदम बनके वस रोज चलते रहे,
रुख तुम्हारा कभी भी समझ ना सका,
मौसमो की तरह तुम बदलते रहे,
रात भर सौ सवालों मे उलझा रहा,
मेरे जज्वात दिल मे मचलते रहे,

शाम आई गई दिन ढला गुल खिला,
तुम सितारों से छुपते निकलते रहे,
हमको मालूम है सब समझते थे तुम
सब समझ के भी नादान बनते रहे,

रात भर सौ सवालों मे उलझा रहा,
मेरे जज्वात दिल में मचलते रहे।

तुम जो फूलों सी

तुम जो फूलों सी खिलने कि कोशिश करो,
मै भ्रमर बन के गुन्जन सुना जाऊंगा ।
दूर से प्रीत अहसास दिल मे भरो,
गीत जज्बात के गुन गुना जाऊंगा,
चांदनी की तरह चमचमाती रहो,
चांद बन के गगन पे मै छा जाऊंगा
तुम जो फूलों सी खिलने कि कोशिश करो,
मै भ्रमर बन के गुन्जन सुना जाऊंगा ।।
दो कदम साथ चलने कि कोशिश करो,
साथ सदियों निभाता चला जाऊंगा,
तुम जो दो पल खुशी के निछावर करो,
दो जहां की खुशी मै लुटा जाऊंगा,
तुम जो फूलों सी खिलने कि कोशिश करो
मैं भ्रमर बन के गुन्जन सुना जाऊंगा।

बस तुम्हारे लिए !

बस तुम्हारे लिए,
फूल खिलता है क्यों,
दिन निकलता है क्यों,
रात ढलती है क्यों,
यों तमन्ना किसी की मचलती है क्यों,
बस तुम्हारे लिए !
पर्वतों की छटा, बादलों की घटा,
मौसमों की हवा रुख बदलती है क्यों
क्यों बना ये गगन,चाँद तारे सघन,
पपीहा ये पिहु -पिहु सुनाता है क्यों
बस तुम्हारे लिए !
प्रीत पलती है क्यों
श्वांस चलती है क्यों
क्यों है दिल में चुभन
क्यों लगी है लगन
बस तुम्हारे लिए !
क्यों बनी दूरियां,
क्यों हैं नजदीकियां
क्यों दवी सी जुवां पे कोई बात है,
क्यों ये जज्बात हैं,
बस तुम्हारे लिए !

तेरी एक नजर

तेरी एक नजर तेरी एक अदा,
दिल मेरा है तुझ पर फिदा।
तेरे रंग में एक नूर है
तेरी चाल चढता सुरूर है
तुझे सब मिला भरपूर है
लगता कि यौवन हो लदा
तेरी एक नजर तेरी एक अदा
दिल मेरा है तुझ पर फिदा।
तेरे बोल मिश्री घोलते
ज्यों रूप तेरा तौलते
स्पर्श तेरा जादुई
नित ऊर्जा भरता नई
तेरे अधर अमृत रस सुधा
तेरी एक नजर तेरी एक अदा
दिल मेरा है तुझ पर फिदा।
तेरा प्यार से मुझे रोकना
कर देता क्यों मजबूर है
तेरी दूरियों का सबब यही
लगता कि तू मगरूर है
अंदाज तेरेजुदा जुदा
तेरी एक नजर तेरी एक अदा
दिल मेरा है तुझ पर फिदा।

बहुत ही तुम तो हो नादां,

बहुत ही तुम तो हो नादां,

मोहब्बत क्या करोगी।

नहीं छूटा है अल्हड़पन,

वो वालापन वो चंचलपन

शरारत ही करोगी,

बहुत ही तुम तो हो नादां

मोहब्बत क्या करोगी।

कसक दिल की न समझोगी,

न पूछोगी न बोलोगी,

अदाओं से सताओगी,

दिवाना ही करोगी

बहुत ही तुम तो हो नादां

मोहब्बत क्या करोगी।

नहीं समझोगी मौसम को,

बहारों को नजारों को

मेरे सारे इशारों को

सुनयने दूर से ही रूप से

जादू करोगी,

बहुत ही तुम तो हो नादां

मोहब्बत क्या करोगी।

न आओगी न जाओगी

समझकर भी सताओगी

रुलाओगी,

कहो कब तक हमारी जां

यूँ हमसे दूर जाओगी

अब तो मान भी जाओ

सयानी हो रहोगी,

बहुत ही तुम तो हो नादां

मोहब्बत क्या करोगी।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम : अनुराग दीक्षित

पिता : श्री दिनेश दीक्षित

माता : श्रीमती मुन्नी देवी

जन्म : १५/०६/१९७६, ग्राम कंझाना जनपद, फर्रुखाबाद, (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा : स्नातकोत्तर वनस्पति विज्ञान व समाज शास्त्र, जन स्वास्थ्य एवं जन संपर्क में स्नातकोत्तर डिप्लोमा ।

प्रकाशन : विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन, स्वास्थ्य विभाग के विभिन्न कार्यक्रमों हेतु स्लोगन लेखन, अभिव्यंजना साहित्यिक संस्था के आजीवन सदस्य एवं अभिव्यंजना के अक्षरालोक प्रकाशन में रचनाएं प्रकाशित व भोपाल मध्यप्रदेश से प्रकाशित लोकजंग में प्रकाशन, भावाभिव्यक्ति काव्य संग्रह साहित्य पीडिया पब्लिकेशन से प्रकाशाधीन।

सम्प्रति : जिला समन्वयक, सोशल मोबिलाइजेशन नेटवर्क यूनिसेफ जनपद संभल उत्तर प्रदेश

सम्पर्क : ०७६५२०६६७३२

Email : dixit08@rediffmail.com, dmc.bdgn4@gmail.com

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-069-8

मूल्य 60/-

शब्द सुगंध